राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में भारतीय ज्ञान प्रणाली का पहल : अतीत और वर्तमान के बीच सेतु

डॉ. दुर्गा शुक्ला
सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
सेठ आर.सी.एस. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य की सबसे बड़ी धरोहर है। शिक्षा समग्र जीवन में चलने वाली एक सतत प्रक्रिया है। यह ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं, ना ही सूचनाओं का एकत्रीकरण **वरन** जीवन, आचरण व संस्कृति मानव की मूल आवश्यकताओं एवं राष्ट्रीय स्वरूप का अंग है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली में ज्ञान-परंपराओं और **रीति-रिवाजों** ने मानवता को पोषित किया है। चरित्र निर्माण और सोच मैं आत्म **आँकलन** का साधन है वैदिक काल में चिंतन का सार तत्व है "असतो मां ज्योतिर्गमय" अर्थात अंधकार से प्रकाश की ओर अनंत यात्रा का नाम है शिक्षा।

भारतीय ज्ञान प्रणाली पहल भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के तहत एक अभिन्ष्ठ प्रकोष्ठ है जिसका उद्देश्य भारत की समृद्ध पारंपरिक ज्ञान परंपरा को मुख्य धारा के शिक्षा और अनुसंधान में एकत्रित कर जोड़ना। शिक्षा प्रणाली में हमें जरूरी नहीं इतिहास के पन्नों को रट्टा मार कर चलना वरन शिलालेख से डिजिटल तक हमें समझना होगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा में खगोल शास्त्र, गणित, वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, नाट्यशास्त्र, योग जैसे प्राचीन ज्ञान इतिहास का हिस्सा ही नहीं वरण आज के समय में पूर्ण रूप से उसकी उपयोगिता और प्रासंगिकता भी है। नक्षत्र योग आयुर्वेद जैसी परंपराएं जीवन शैली में वरदान सिद्ध हो रही है भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य ही है मानव जीवन का समग्र विकास। गोरे इंडियन एजुकेशन 1990.29 के अनुसार प्रौद्योगिकी विशेषता अर्जित करना, उच्च प्रशासनिक पद ग्रहण करना, नए धंधे सीखना, धन की सफलता और समाज में सम्मान प्राप्त करने के लिए कुछ कार्य क्षेत्र, योग्यता और श्रेष्ठ**ता** प्राप्त करना केवल शिक्षा से ही संभव है। राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली व्यक्ति के चरित्र निर्माण, नैतिक विकास, व्यावसायिक तकनीकी प्रशिक्षण **तक** सीमित नहीं है बल्कि भारतीय ज्ञान अतीत की धरोहर ना होकर प्राचीन ज्ञान की आधुनिक **संदर्भों** में बहु उपयोगी बनाकर हमारी सांस्कृतिक और बौद्धिक विरासत को आगे बढ़ा रही है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा

भारत में प्राचीन समय में गुरुकुल प्रणाली द्वारा शिक्षा दी जाती थी। विद्यार्थी वेद, उपनिषद और विभिन्न शास्त्रों के अध्ययन के साथ आत्म संयम, अनुशासन, सेवा भाव व प्रकृति प्रेम के लिए प्रशिक्षित किए जाते थे। **वे पुस्तकीय** ज्ञान नहीं व**र्ण** जीवन जीने की कल में **भी** दक्ष थे। अपने जड़ से जुड़े रहने के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास भी करते थे। औपनिवेशिक **काल** के दौरान इन ज्ञान परंपराओं को शिक्षा से अलग कर दिया

गया था। लॉर्ड **मैकाले** की शिक्षा पद्धति भारतीयों को तन से भारतीय और मन से अंग्रेज बना**ना** था अंग्रेजी शासन से मुक्ति पाने के लिए एक नए भारत **ने** जन्म लिया वैदिक संस्कृति **के** प्रचार में विवेकानंद जी का योगदान रहा। **आधुनिक** समाज का निर्माण करने का बीड़ा राजा राममोहन राय ने ब्रहम समाज की स्थापना कर अंधविश्वास, रूढ़ियों, कर्मकांड आदि का सामना करने के लिए उपनिषदों का सहारा लिया। भारतीय ज्ञान प्रणाली आधुनिक शिक्षा और अनुसंधान से जोड़ती है उदाहरण प्राचीन **गणित** और खगोल शास्त्र आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान को प्रेरित कर सकते हैं। भारतीय दर्शन और नैतिक विचार आधुनिक जीवन की समस्याओं के समाधान के साथ नवाचार को बढ़ावा मिलेगा.

भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताएं

भारतीय ज्ञान परंपरा में समग्रता व नैतिकता के साथ प्रकृति का संतुलन भी प्रमुख है भारतीय ज्ञान का संबंध बुद्धि नहीं वरन नैतिक मूल्य व आध्यात्मिक ज्ञान है जो व्यक्ति को नैतिकता, अहिंसा, सत्य, कर्तव्य निष्ठा, करुणा, दया, क्षमा जैसे मानवीय मूल्यों के लिए प्रेरित करती है। भारतीय ज्ञान सैद्धांतिक नहीं **वरन** अभ्यास और अनुभव के आधार पर आधारित है। समन्वय की भावना हमारी विशेषता है। भारतीय ज्ञान किताबों में **नई** जीवन जीने की **कला** है। **शिक्षण** और ज्ञान अर्जन में बहु भाषावाद को बढ़ावा देना साथ ही लोकगीत, लोक परंपराएं, हस्तकला, लोक साहित्य भी ज्ञान परंपरा के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। यही भावना हमें नए ज्ञान और विचारों को संस्कृति का हिस्सा **बनाये हुए है** ।

आधुनिक युग में परिवर्तन और वर्तमान समय की चुनौतियां :

आधुनिक युग में विज्ञान, तकनीकी के विकास के कारण शिक्षा प्रणाली में अनेक परिवर्तन हुए। पश्चिमी शिक्षा पद्धति का प्रभाव इतना **बढ़ा** की पारंपरिक ज्ञान **उपेक्षित** हुए। कई प्राचीन पांडुलिपि**यां थी साथ ही त**क्षशिला और नालंदा **जैसी शिक्षण संस्थाओं** को समाप्त कर दिया गया। पश्चिमी विचारधारा पश्चिमी ज्ञान को प्राथमिकता मिलने के कारण नई पीढ़ी अपने पारंपरिक ज्ञान से दूर हो गई। आज **के** समाज **में** पर्यावरण की समस्या सबसे विकट और भयावह है। भूस्खलन, अतिवृष्टि, जलवायु परिवर्तन बड़ी चुनौती है। मानव समाज आधुनिकता, फैशन, मशीनों और उपभोक्तावादी **संस्कृति** में वह इतना तल्लीन है जो कुछ उसकी संस्कृति में अच्छा है वह उसे गवा बैठा है। फलतः सामाजिक मानवीय और नैतिक मूल्यों का ह्रास हो गया। युवा पीढ़ी विदेशी विचारों को **आत्मसात** कर रही है यह भी जीवन मूल्यों में परिवर्तन का एक बड़ा कारण है।

अतीत और वर्तमान के बीच सेतु व महत्व

भारतीय ज्ञान परंपरा अतीत और वर्तमान के बीच सेतु का कार्य कर रही है । भारत की सांस्कृतिक विविधता पूरे विश्व में अलग पहचान रखती है । भारत की प्राचीन परंपरा में वैज्ञानिकता एवं मानवता का अद्भुत संगम है, योग, आयुर्वेद और भारतीय दर्शन को विश्व ने स्वीकार किया है । नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना राष्ट्रीय पहचान और नैतिक मूल्यों की भावना को विकसित करना है जिससे छात्रों में राष्ट्रीय पहचान और आत्म गौरव की भावना विकसित हो सके । व्यक्ति स्वयं के हित के बारे में ना सोचे समाज और प्रकृति के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करती है, इस प्रकार सामाजिक समरसता के लिए महत्वपूर्ण है ।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा को अतीत का ज्ञान मानने की मानसिकता इसके आधुनिक उपयोग में सबसे बड़ी बाधा है । राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य भारत की समृद्ध बौद्धिक विरासत को पुनर्जीवित करना है । भारतीय ज्ञान लोगों की बौद्धिक संपदा है जो **पीढ़ियों** से चली आ रही है साथ ही उसके अस्तित्व का अभिन्न अंग है । योग और मेडिटेशन जैसे प्राचीन भारतीय ज्ञान को विश्व भर में अपनाया जा रहा है, जो शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है । भारतीय ज्ञान एक ऐसी शिक्षा तंत्र को बनाना है, जो सांस्कृतिक रूप से समृद्ध रहे साथ ही भारतीय दर्शन और मूल्यों के साथ मिलकर आगे बढ़ेंगे । भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य ज्ञान अर्जन नहीं बल्कि चरित्र निर्माण व सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करना है । यह अतीत की बौद्धिक विरासत नहीं **वरन** वर्तमान और भविष्य का आधार भी है । आधुनिक विज्ञान के समन्वय से पारंपरिक ज्ञान व नवाचार को बढ़ावा मिलेगा । यह शिक्षा न केवल रोजगार उन्मुख होगी बल्कि सांस्कृतिक पुनर्जागरण एवं आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला के रूप में मिल का पत्थर साबित होगी.

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 भारत सरकार 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा मंत्रालय.

2 मिश्रा रोशनी एवं रस्तोगी शिखा हिंदी साहित्य का इतिहास आधुनिक काल पृष्ठ 2

3 गोरे इंडियन एजुकेशन रावत पब्लिकेशन 1990 पृष्ठ 29

4 **http.//Maharaja college. ac. in**

5 अग्रवाल वासुदेव शरण 1953 भारत की मौलिक एकता साहित्य अकादमी

6 भारत सरकार 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 National Education policy 2020 शिक्षा मंत्रालय

7 वंदना शिवा Making peace with the Earth पर्यावरण और भारतीय परिपेक्ष में